International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-7, Issue-6 December- 2020
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

हिन्दी बाल साहित्य के विकास पर एक लघु अध्ययन

जमना देवी
Research Scholar
Malvanchal University
Indore (M.P.)

डॉ0 शोभा रतूड़ी
Research Supervisor
Malvanchal University
Indore (M.P.)

सार

अगर हम हिन्दी साहित्य में बाल साहित्य पर चर्चा करें तो हमें बाल साहित्य के कुछ इतिहास पर प्रकाश डालना पड़ेगा, जिससे वर्तमान पायदान तक पहुंचते–पहुंचते कितना परिवर्तन हुआ है उसे समझने में कुछ आसान होगा। जहां तक हिन्दी बाल साहित्य का प्रारंभ सन 1882 ई में भारतेंदु हरिश्चंद्र के प्रयास से प्रकाशित बाल दर्पण से माना जाता है। पर इसकी विधिवत शुरुआत तो 1915 में प्रकाशित शिशु एवं 1917 में पं. लल्ली प्रसाद पांडेय द्वारा प्रकाशित 'बालसखा' पत्रिका से प्रारंभ हुई। बाद में आचार्य राम कुंवर शरण ने 'बालक', पं. रामजी शर्मा ने 'खिलौना', विश्वप्रकाश ने 'चमचम', कुंवर सुरेश सिंह ने 'कुमार' तथा व्यवथित हृदय ने 'तितली' और 'मदारी' जैसे बाल पत्रिकाएं निकालकर बाल साहित्य को स्थायित्व प्रदान करने का प्रयास किया। अर्थात हिन्दी में बाल साहित्य का इतिहास लगभग सौ वर्ष ही पुराना है। लोगों में आम धारण यह रही कि बाल साहित्य सबसे निम्न स्तरीय हलकापन लिए हुए होता है। शायद यही वजह रही होगी जो हर बडा लेखक बाल साहित्य लिखने से बचता आया है। कुछ तो ऐसे लेखक है। जिन्होंने शुरुआत बाल साहित्य से तो की थी परंतु जब उन्हें प्रौढ साहित्य में मान्यता मिलने लगी तो वे तुरंत बाल साहित्य से अलग हो लिए। हिन्दी के लेखकों ने अधिकांश ऐसा ही किया। उन्होंने बाल साहित्य को दोयम दर्जे का साहित्य मान लिया है। बाल साहित्य पर शोध कार्य भी किया है। जैसे सिनेमा जगत के महान निर्देशक भारत रत्न तथा ऑस्कर सम्मान से सम्मानित सत्यजित राय के दादाजी उपेंद्र किशोर राय, उनके पिता सुकुमार राय और उनकी बहन लीला राय के अलावा कार्टूनिस्ट नारायण देबनाथ आदि ने बांग्ला के बाल साहित्य पर लेखन के साथ–साथ शोध आदि पर अनेक कार्य किए।

मुख्य शब्दः– बालसाहित्य, हिन्दी और विकास

प्रस्तावना

हिन्दी बाल साहित्य को आधार–भूमि के रूप में संस्कृत सम्पदा मिली तो पोषण के रूप में देश के कोने–कोने में विद्यमान लोक संस्कृति का जीवन रस भी विपुल मात्रा में प्राप्त हुआ। फूल और बच्चे प्रकृति की सुंदरतम रचनाएँ हैं और बचपन को सुखद और प्रयोजनशील बनाने के लिए जो भी किया जाए कम है, क्योंकि बालक देश–समाज के भविष्य होते हैं। आज का बालक कल का भविष्य है, वह राष्ट्र निर्माता है। अपनी योग्यता के बल पर वह जब बुराइयों से लड़ता है और अपने समाज तथा देश में नई चेतना भरता है, तब वह राष्ट्र विकसित होकर उन्नतशील देशों के समक्ष खड़ा होने योग्य हो जाता है। जीवन की मुख्य–धारा में पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अविचल रहकर अपने भविष्य की ओर कदम बढ़ाने में बालमन के संस्कार एवं शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। बाल मन कच्ची मिट्टी का बना होता है उसे जिस साँचे में ढाला जाए, वह वैसा ही रूप धारण कर लेता है। बाल मन जिन संस्कारों को ग्रहण करता है। जीवन संध्या तक वे उसके साथ बने रहते हैं। बालक का मन किसी भी बात को आसानी से गहराई से ग्रहण करने में समर्थ होता है। यह कार्य साहित्य के माध्यम से संभव होता है।

पंचतंत्र में विष्णु शर्मा ने कहा है – ''जिस प्रकार किसी नये पात्र का कोई संस्कार नहीं रहता ठीक उसी प्रकार बालकों की स्थिति होती है। इसलिए उन्हें कथाओं के माध्यम से ही संस्कार बताना चाहिए। नीति कथाओं से परिपूर्ण बालकों की जिज्ञासा को शांतकरने वाला साहित्य ही बाल साहित्य है।''

अतः उपरोक्त आधार पर यह कहा जा सकता है कि बालक को जैसा संस्कार मिलता है, जिस प्रकार के परिवेश में उसका लालन–पोषण होता है, जो परंपराएँ उसे मिलती हैं उन्हीं के बीच उसका पूर्ण विकास होता है।

साहित्य की समीक्षा

डॉ. सुरेन्द्र विक्रम तथा जवाहर 'इन्दु' ने कहा है – ''बाल मनोविज्ञान का अध्ययन किए बिना कोई भी रचनाकार स्वस्थ एवं सार्थक बाल साहित्य का सृजन नहीं कर सकता है। यह बिल्कुल निर्विवाद सत्य

है कि बच्चों के लिए लिखना सबके वश की बात नहीं है। बच्चों का साहित्य लिखने के लिए रचनाकार को स्वयं बच्चा बन जाना पड़ता है। यह स्थिति तो बिल्कुल परकाया प्रवेश वाली है।"

प्रसिद्ध कवि सोहनलाल द्विवेदी ने बाल साहित्य का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा है ''सफल बाल साहित्य वही है जिसे बच्चे सरलता से अपना सकें और भाव ऐसे हों, जो बच्चों के मन को भाएँ। यों तो अनेक साहित्यकार बालकों के लिए लिखते रहते हैं, किन्तु सचमुच जो बालकों के मन की बात, बालकों की भाषा में लिख दें, वही सफल बाल साहित्य लेखक हैं।"

हरिकृष्ण देवसरे बाल साहित्य के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं ''आज के जीवन में बच्चों का जो स्वरूप है, वह किसी राजनीतिक या पिछड़ी हुई सामाजिक विचारधारा से प्रभावित है। बच्चों को जिस मनोवैज्ञानिक साहित्य और व्यवहार की आवश्यकता होती है, उसे बिल्कुल ही अलग कर दिया गया है। तद्युगीन समाज और वातावरण के अनुकूल बच्चों को बनाना आवश्यक तो है, किन्तु उनकी मूल प्रवृत्तियों को विकसित न होने देना, उनके प्रति अन्याय है।

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे बालकों के साहित्य में अंधविश्वास, चमत्कार जैसी चीजों के खिलाफ थे क्योंकि उन्हें लगता था कि बालकों पर इनका दुष्प्रभाव हो सकता है। बच्चों का साहित्य चूँकि बड़े ही लिखते हैं इसलिए उनका बालकों की भावना, कल्पना का पूर्णतः ख्याल रखना अत्यावश्यक हो जाता है। बालकों की दुनिया बड़ों की दुनिया से सर्वथा अलग होती है तो उनका साहित्य भी अलग ही होगा।

शंकर सुल्तानपुरी लिखते हैं ''आज जब मानव मूल्यों का विघटन हो रहा है, नैतिक मूल्य गिर रहे हैं। स्वार्थ, भ्रष्टाचार, अनैतिकता का बोलबाला है और भारतीय संस्कृति की गरिमा धूमिल हो रही है, ऐसे समय में बाल साहित्यकारों की भूमिका बड़ी अहम है। उन्हें ऐसे बाल साहित्य सृजन की ओर उन्मुख होना है जो क्षणिक मन बहलाव का न होकर स्थायी रूप से बच्चों के चरित्र विकास में, उनका मनोबल ऊँचा करने में प्रेरक सिद्ध हो।"

मार्क ट्वेन तथा आर.. एल. स्टीवेंसन के उपन्यास बालकों में बहुत प्रिय हैं और इन उपन्यासों में लेखकों के बचपन की आकांक्षा और कल्पना की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। आत्माभिव्यक्ति की इच्छा से प्रेरित होकर बाल साहित्य की रचना सरल काम नहीं है। महादेवी वर्मा कहती है कि बाल साहित्य का सृजन

यदि सहज होता तो सभी उसे कर सकते थे। फिर भी प्रत्येक देश में बाल साहित्य लिखा गया है किंतु उन्हीं व्यक्तियों ने लिखा है जो अंत तक बालकों का सा हृदय रखते थे।

एलिजाबेथ नेस्बित भी कहती है कि यह वांछनीय है कि बालकों के गद्य लेखक अपने वयस्क हृदय में बचपन की स्मृतियों तथा छापों को संजोए रहें और बच्चों के लिए कविता लिखने वालों में तो ये गुण अनिवार्य रूप से विद्यमान होने चाहिए।

जयप्रकाश भारती जी ने एक साक्षात्कार में कहा था कि एक आदर्श बाल साहित्यकार का सबसे बड़ा गुण यह है कि वह स्वयं बालक बना रहे, अगर बालक जैसी सरलता उसमें होगी तभी वह बच्चे के लिए लिख सकेगा। सबसे बड़ी बात है बच्चा बनने और बालमन को पूरी तरह समझने की चेष्टा। वैसे बात यह भी है कि सारा जीवन लगा दें, तब भी बालमन को पूरी तरह समझना असंभव सा है क्योंकि समाज के छल–कपट से प्रभावित होते हम बड़े, बचपन से छूटते जाते हैं। रवीन्द्र नाथ टैगोर के शब्दों में हम सत्य को भी असंभव कहकर छोड़ देते हैं और बच्चे असंभव को भी सत्य कह कर ग्रहण कर लेते हैं।

हिन्दी बाल साहित्य का विकास

इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक में प्रवेश करने के पश्चात् हिन्दी बाल साहित्य के विकास क्रम में बाल साहित्य की लगभग समस्त विधाओं, यथा – गीत, कविता, कहानी, उपन्यास, फंतासी आदि का उत्तरोत्तर समुचित, सुविचारित और सुव्यवस्थित विकास हुआ है। इससे पूर्व 19वीं और 18वीं सदी के उपलब्ध बाल साहित्य पर दृष्टिपात किया जाये तो इनमें मौखिक परंपरा, श्रुति अथवा स्मृति की लोक परंपरा के विपुल साहित्य के अलावा पंचतंत्र और हितोपदेश जैसी बालपयोगी संस्कृत रचनाएँ भी थीं। उपर्युक्त साहित्य में कथा शैली में नीति–कथन के माध्यम से बच्चों को संस्कारवान् बनाना ही उद्देश्य था।

बाल साहित्य का उद्भव लोक साहित्य से ही माना गया है। संसार की सभी भाषाओं के लोक साहित्य का बाल साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है; तथा लोक साहित्य ने ही बाल साहित्य की नींव सुदृढ़ की और उसके विकास में भी सहायक रहा है। हिन्दी बाल साहित्य की पृष्ठभूमि के निर्माण में संस्कृत बाल साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संस्कृत बाल साहित्य में 'कथासरित्सागर,

'पंचतंत्र' आदिप्रमुख है। संस्कृत बाल साहित्य रचना की जो परंपरा रही है, वही हिन्दी साहित्य में गृहित हुई है। बाल साहित्य का विकास निम्न युगों में विभाजित किया गया हैः–

1. संस्कृत वाङ्मय में बाल साहित्य।
2. पूर्व भारतेन्दु युग सन् 1845 से 1873 तक।
3. भारतेन्दु युग सन् 1874 से 1900 तक।
4. द्विवेदी युग सन् 1901 से 1930 तक।
5. आधुनिक युग सन् 1931 से 1946 तक।
6. स्वातंत्र्योत्तर युग सन् 1947 से 1957 तक।

(1) संस्कृत वाङ्मय में बाल साहित्य का विकासः– संस्कृत वाङ्मय में बाल साहित्य का विकासः– ''भारतीय परंपरा में शिशुओं के सर्वांगीण चारित्रिक विकास एवं संतुलित व्यक्तित्व निर्माण के लिए एक ओर तो विभिन्न संस्कारों की उद्भावना की गई है, वहीं दूसरी ओर ऐसा साहित्य रचा गया है जिसके माध्यम से वे शिशु से वयस्क होने की दिशा में बढ़ते हुए बेहतर मनुष्य बनें।''

रामायण, महाभारत, पुराण, उपपुराण आदि इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते है। रामायण की कथा समाज और राष्ट्रहित में सामाजिक होने की शिक्षा देती है। बचपन से ही रामकथा का यह रामबाण शिशुओं में भाईचारे की स्वस्थ प्रेरणा प्रदान करता है। महाभारत भी इसी तरह अपनी शैली में इसी पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय सौहार्द्र की भावना का संदेश देता है।

''बालक ने प्रकृति की गोद में नयन खोले, प्रभात का दिव्य आलोक, समीरण के मृदुल और मधुर झोंके पाकर उसकी जीवनलीला विकासमान हुई। बच्चों को रिझाने, खिझाने, पालने से गति संचरणकाल तक उसमें मातृत्व भावना का बीजांकुरण हुआ। बाल समस्याओं, प्रश्नों, परिचितों को लेकर आत्मबोधात्मक ज्ञान बच्चों के लिए पहली पुस्तक है जिसके समाधानों द्वारा बच्चा आगे बढ़ता और प्रेरणा तथा जीवनशक्ति पाता है। बालक के यही अनुभव तथा प्रेरणा के नवोत्सर्ग उसमें संस्कारगत ऊर्जा का प्रसार करते हैं।

(2) पूर्व भारतेन्दु युग (सन् 1845 से 1873 तक):– इसका विभाजन सन् 1845 से 1873 तक का है। इस युग के आरंभ में खड़ी बोली गद्य का प्रादुर्भाव हो गया था। ''हिन्दी गद्य की वास्तविक प्रगति राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' ने की।

उन्होंने 'बनारस' अखबार निकाला था। उन्होंने परंपरागत प्रवृत्ति को त्यागकर हिन्दी को एक नई दिशा दी। इस युग के प्रसिद्ध लेखक लल्लूलाल, सदल मिश्र, राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्दी' , सदा सुखलाल आदि थे। जिन्होंने बाल साहित्य की रचना की।

इस युग को आदि युग भी कहा गया। इस युग को दो भागों में बांटा गया– पहले भाग के अंतर्गत उस लोक साहित्य को रखा गया जिसके अंतर्गत जनसामान्य साहित्य यथा दादा–दादी, नाना–नानी अथवा परिवार के अन्य सदस्य बच्चों को प्रायः रात में सोते समय मनोरंजक अथवा नैतिक कथाएँ सुनाते थे। ये कहानियाँ पंचतंत्र, हितोपदेश की होती थीं। जो अलिखित थी तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती रहती थी।

(3) भारतेन्दु युग (सन् 1874 से 1900 तक):–भारतेन्दु युग को 'पुनर्जागरण काल' भी कहा गया है। भारतेन्दु ने नई पीढ़ी को प्रेरणा देने वाला साहित्य लिखा। वे भारतीयों की नवोदित आकांक्षाओं और राष्ट्रीयता के प्रतीक थे। डॉ. हरिकृष्ण देवसरे जी ने हिन्दी बाल साहित्य का अविर्भाव काल भारतेन्दु युग को सिद्ध करते हुए कहा है कि भारतेन्दु युग में सन् 1874 में 'बालबोधिनी पत्रिका' का प्रकाशन एक ऐसी ऐतिहासिक घटना है जो यह प्रकाशित करती है कि बाल वर्ग के लिए भी पृथक् साहित्य लिखना आवश्यक समझा गया था।'' भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने अनेक ऐसी रचनाएँ लिखीं, जिनसे तद्युगीन बाल तथा किशोर पीढ़ी प्रभावित हुई और उनके मन पर अमिट छाप पड़ी। लाला श्रीनिवास दास, पं. बालकृष्ण भट्ट, राधाकृष्णदास, काशीनाथ खत्री आदि प्रमुख लेखकों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

(4) द्विवेदी युग (सन् 1901 से 1930 तक):– इस युग में हिन्दी बाल साहित्य में अनेक परिवर्तन हुए तथा अनेक ऐसी रचनाएँ भी लिखीं गईं जिनमें मनोरंजन भी था। इस युग के बाल साहित्य में भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्वों, धार्मिक कहानियों तथा नीति कथाओं की प्रधानता रही और प्रचुर मात्रा में बाल साहित्य लिखा गया।

सन् 1903 से द्विवेजी जी ने इंडियन प्रेस प्रयाग से प्रकाशित सरस्वती पत्रिका का संपादन भार सम्हाला था, तब से हिन्दी में बच्चों का साहित्य अधिक मात्रा में लिखा जाने लगा, इसलिए यह युग बाल साहित्य के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण रहा। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से अनेक धार्मिक ग्रंथों के बाल संस्करण जैसे– 'बाल भागवत', 'बाल रामायण', 'बाल महाभारत' आदि लिखे गए और इंडियन प्रेस से प्रकाशित हुए।

(5) आधुनिक युग (सन् 1931 से 1946 तक):– इस युग को जागरण का युग कहा जाता था। इस समय देश में स्वदेशी आंदोलन की लहर थी। वहीं दूसरी ओर इस वातावरण से बाल साहित्य पर भी विशेष प्रभाव पड़ा। राष्ट्रीयता के भाव से ओत–प्रोत रचनाओं का सृजन हुआ। पं. सोहनलाल द्विवेदी ने 'शिशुभारती' के प्रकाशन की योजना बनाई। इसमें बाल साहित्य के प्रमुख सर्वश्री अयोध्यासिंह उपाध्याय, कामताप्रसाद गुरु, श्रीधर पाठक, मन्नन द्विवेदी, रामनरेश त्रिपाठी, विद्याभूषण, स्वर्ण सहोदर, श्रीनाथ सिंह, उर्मिला गुप्ता, सुभद्राकुमारी चौहान, गिरीराज दत्त शुक्ला, हरिदास चतुर्वेदी आदि थे। इस युग के कवियों में सुमित्रानंदन पंत, माखनलाल चतुर्वेदी, पं. लल्ली प्रसाद पाण्डेय के नाम उल्लेखनीय है। इस प्रकार इस काल में बाल साहित्य की वृद्धि हुई।

स्वातंत्र्योत्तर युग (सन् 1947 से 1957 तक):– स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जीवन मूल्य धीरे–धीरे बदलने लगे। बाल साहित्य के विकास के लिए यह समय बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। नई–नई विचारधाराओं ने जन्म लिया। सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक सभी स्थितियों में तेजी से परिवर्तन हुआ जिससे समाज के सभी वर्गों में चेतना और जागरूकता बढ़ी। इस काल में बाल साहित्य की सर्जना, विकास और प्रगति हेतु अनेक प्रयास हुए तथा जबलपुर में साहित्य प्रसार और प्रचार समिति की स्थापना की गई।

उपसंहार

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि बाल साहित्य का उद्भव प्राचीन संस्कृत ग्रंथ पंचतंत्र, सिंहासन बत्तीसी, बेताल पच्चीसी आदि से माना जाता है। इस समय हिन्दी का अस्तित्व नहीं था। धीरे–धीरे भाषा अपने विभिन्न रूपों में बदलती हुई आज खड़ी बोली हिन्दी के मानक रूप में प्रयोग की जाती है। जब हिन्दी में साहित्यकारों ने बाल साहित्य सृजन प्रारंभ किया तब संस्कृत ग्रंथों को ही आधार बनाया। प्राचीन

काल में श्री विष्णु शर्मा के 'पंचतंत्र' नामक ग्रंथ में नीतिपरक, प्रेरणाप्रद, साहसिक, मनोरंजक कथाओं को हिन्दी में अनूदित करके बच्चों के सामने प्रस्तुत किया गया। परवर्ती बाल साहित्य भी इसी आधार पर बाल कहानी, उपन्यास, कविता रूप में रचा गया। इस तरह हिन्दी बाल साहित्य विभिन्न रूपों में विकसित हुआ। वर्तमान में इसका समृद्धशाली रूप हमारे समक्ष है।

इस प्रकार हिन्दी बाल साहित्य निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। साहित्य बालकों से सीधा संवाद स्थापित करने की विधा है। बाल साहित्य की विषयवस्तु बालक भी हो सकता है तथा विस्तृत परिवेश भी जिसके साथ बाल–जीवन विकसित होता है। बाल साहित्य बालकों को उनके परिवेश सामाजिक, सांस्कृतिक परंपराओं, संस्कारों, जीवन मूल्यों, आचार–विचार और व्यवहार के प्रति सतत् चेतन बनाने में अपनी भूमिका निभाता आया है। वर्तमान में वैज्ञानिकता बाल साहित्य की प्रमुख प्रवृत्ति है। वर्तमान युग विज्ञान का युग है। विज्ञान हमारे जीवन का अंग और आधार है। विज्ञान की महान उपलब्धियों ने विकास को ऊँचे सोपान पर पहुँचाया है। विज्ञान ने न केवल उन्नति के अवसर प्रदान किये है बल्कि उनके विकास एवं प्रगति में सहायक बनकर उनकी नयी–नयी आकांक्षाओं के अनुरूप लिखा जा रहा है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिन्दी बाल साहित्य आज चतुर्मुखी प्रगति कर रहा है। इन्दौर, भोपाल, उत्तराखंड आदि स्थानों में बाल साहित्य शोध केन्द्र की स्थापना इसका प्रमाण है।

संदर्भ

- एंडरसन, नैन्सी (2006)। प्राथमिक बाल साहित्य । बोस्टनः पियर्सन एजुकेशन। आईएसबीएन 978–0–205–45229–3.
- बॉलर, पीटर जे. (2009), साइंस फॉर ऑलः द पॉपुलराइजेशन ऑफ साइंस इन अर्ली ट्वेंटिएथ–सेंचुरी ब्रिटेन (सचित्र संस्करण), शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, आईएसबीएन 978–0–226–06863–3
- चौपलाऊ, सेबेस्टियन (2004). बाल साहित्य आलोचना में नई आवाजें। लिचफील्डः पाइड पाइपर पब्लिशिंग।

- हैन, डैनियल (2015)। ऑक्सफोर्ड कम्पेनियन टू चिल्ड्रन लिटरेचर । ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। आईएसबीएन 978–0–19–969514–0.
- हक, शार्लोट (2001)। प्राथमिक विद्यालय में बाल साहित्य, 7 वां संस्करण । न्यूयॉर्क: मैकग्रा–हिल। आईएसबीएन 978–0–07–232228–6.
- हंट, पीटर (1991)। आलोचना, सिद्धांत और बाल साहित्य । ऑक्सफोर्ड: ब्लैकवेल. आईएसबीएन 978–0–631–16231–5.
- लेसनिक–ओबरस्टीन, कैरिन (1996)। ''बाल साहित्य और बचपन को परिभाषित करना'' । हंट में, पीटर (सं.). बाल साहित्य का अंतर्राष्ट्रीय सहयोगी विश्वकोश। लंदन: रूटलेज. पीपी 17–31 । आईएसबीएन 978–0–415–08856–5.
- रोज, जैकलीन (1984). पीटर पैन का मामला या बच्चों की कल्पना की असंभवता (1993 संस्करण) । फिलाडेल्फिया: पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय प्रेस। आईएसबीएन 978–0–8122–1435–2.
- शर्मा, प्रेम लता (2006), ''द साइकोलॉजी ऑफ टीचिंग एंड लर्निंग'' , सरूप टीचिंग लर्निंग सीरीज, दिल्ली: सरूप एंड संस, 17, आईएसबीएन 978–81–7625–642–1